सूरह — एक कहानी

सूरह अस-साफ़्फ़ात

सफ़ बाँधने वाले

पूरा सफ़र — एक बाप से माँगी गई सब से बड़ी आज़माइश —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 37 • 182 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वस्-साफ़्फ़ाति सफ़्फ़ा
1. क़सम उन की जो सफ़ बाँध कर खड़े होते हैं।

इन्ना इलाहकुम ल-वाहिद
4. बेशक तुम्हारा माबूद एक ही है।

क़ाल या बुनय्य इन्नी अरा फ़िल्-मनामि अन्नी अज़्बहुक फ़न्ज़ुर माज़ा तरा
102. उसने कहा: ऐ मेरे प्यारे बेटे, मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं तुम्हें ज़िबह कर रहा हूँ, तो देख तेरा क्या ख़याल है।

क़ाल या अबतिफ़्-'अल मा तुअ्मरु सतजिदुनी इन शा-अल्लाहु मिनस्-साबिरीन
102. उसने कहा: ऐ मेरे अब्बा, जो आपको हुक्म दिया गया वो कर दीजिए; आप मुझे, इन शा अल्लाह, सब्र करने वालों में से पाएँगे।

फ़-लौला अन्नहू काना मिनल्-मुसब्बिहीन
143. तो अगर वो तस्बीह करने वालों में से न होता।

सुब्हान रब्बिक रब्बिल्-'इज़्ज़ति 'अम्मा यसिफ़ून
180. पाक है तुम्हारा रब, 'इज़्ज़त का रब, उन बातों से जो वो बयान करते हैं।

सफ़ें, और एक महफ़ूज़ आसमान

बेटा, ये सूरह तीन क़समों से खुलती है जो ऐसी मख़्लूक़ बयान करती हैं जिन्हें तुम देख नहीं सकते: '**वस्-साफ़्फ़ाति सफ़्फ़ा** — उन की क़सम जो **सफ़ बाँध** कर खड़े होते हैं — **फ़ज़्-ज़ाजिराति ज़ज्रा** — और उन की जो (बादलों को) ज़ोर से **हाँकते** या **रोकते** हैं — **फ़त्-तालियाति ज़िक्रा** — और उन की जो नसीहत **पढ़ते** हैं।'

उलमा इन्हें फ़रिश्तों के तौर पर समझाते हैं: इबादत के लिए तरतीब-वार सफ़ों में खड़े, अल्लाह के हुक्म से हाँकते और रोकते, और उसके अल्फ़ाज़ पढ़ते।

बेटा, पहली तस्वीर ग़ौर कीजिए — '**सफ़्फ़ा**', **सफ़ों** में। और इसे उस चीज़ से जोड़िए जो नबी ﷺ ने हमें बताई। आप ने अपने सहाबा से पूछा: क्या तुम वैसे सफ़ नहीं

बाँधोगे जैसे फ़रिश्ते अपने रब के सामने सफ़ बाँधते हैं? उन्होंने पूछा कि फ़रिश्ते कैसे करते हैं। आपने फ़रमाया: वो **पहली सफ़ें पूरी** करते हैं, और वो सफ़ में **घुट कर (मिल कर)** खड़े होते हैं।

बेटा, तो हर बार जब आप मस्जिद में एक सफ़ सीधी करते और अपने बग़ल की ख़ाली जगह बंद करते हैं, आप **आसमानों की तरतीब की नक़्ल** कर रहे होते हैं। नमाज़ की सफ़ें भीड़ का इंतेज़ाम नहीं — ये उस चीज़ की नक़्ल हैं जो ऊपर हो रही है।

'**इन्ना इलाहकुम ल-वाहिद** — बेशक, **तुम्हारा माबूद एक** ही है — **रब्बुस्-समावाति वल्-अर्ज़ि व मा बैनहुमा व रब्बुल्-मशारिक़** — आसमानों और ज़मीन का और जो उन के दरमियान है उनका रब, और **मशरिक़ों** का रब।'

बेटा, 'अल-मशारिक़' — जमा। क्योंकि सूरज एक मुक़र्रर नुक़्ते से तुलू' नहीं होता; इसकी तुलू' होने की जगह साल-भर उफ़ुक़ पर सरकती रहती है। उस सहरा के अरब इसे मुशाहिदे से जानते थे, और आयत इसे नाम देती है।

'**इन्ना ज़य्यन्नस्-समा-अद्-दुन्या बि-ज़ीनतिनिल्-कवाकिब** — बेशक, हमने क़रीबी आसमान को **सितारों** की ज़ीनत से सजाया — **व हिफ़्ज़म्-मिन कुल्लि शैतानिम्-मारिद** — और हर सरकश शैतान से **हिफ़ाज़त** के तौर पर।'

बेटा, सितारे एक साथ दो मक़्सद पूरे करते हैं: तुम्हारे देखने के लिए ख़ूबसूरती, और उन के ख़िलाफ़ एक महफ़ूज़ सरहद जो आसमानों पर छुप कर सुन-ना चाहें।

तुमसे पूछा जाएगा, और वो एक दूसरे को इल्ज़ाम देंगे

फिर सूरह क़ियामत के दिन की तरफ़ मुड़ती है, और यहाँ एक मंज़र है जिसे हर नौजवान को पढ़ना चाहिए।

'**व क़िफ़ूहुम इन्नहुम मस्ऊलून** — और उन्हें **रोक लो**; बेशक, **उन से पूछा जाएगा।**'

बेटा, 'क़िफ़ूहुम' — उन्हें ठहराओ। एक भीड़ को आगे बढ़ते हुए सोचो, और फिर एक हुक्म: **रुको।** कोई बिना सवालों के नहीं गुज़रता।

और फिर पैरोकार और लीडर एक दूसरे पर पलटते हैं: '**क़ालू इन्नकुम कुन्तुम तअ्तूनना 'अनिल्-यमीन** — वो कहेंगे: बेशक, **तुम हमारे पास दाएँ तरफ़ से आते** थे।' बेटा, 'दाएँ तरफ़ से' — ज़ाहिरी भलाई और ख़ुलूस की तरफ़ से, बुराई को मो'अज़्ज़ज़ दिखाते हुए।

'**क़ालू बल लम तकूनू मुअ्मिनीन** — वो जवाब देंगे: बल्कि, **तुम ईमान वाले न थे** — **व मा काना लना 'अलैकुम मिन सुल्तान** — और हमारा तुमपर **कोई ज़ोर** न था — **बल कुन्तुम क़ौमन ताग़ीन** — बल्कि, तुम एक सरकश क़ौम थे।'

बेटा, ये उस दिन की बड़ी मायूसी है। वो लोग जिनकी तुम पैरवी करते थे — वो दोस्त जिसकी रज़ामंदी खोने से तुम डरते थे, वो मशहूर शख़्सियत जिसकी ज़िंदगी तुम नक़्ल करते थे, वो लीडर जिसका तुम दिफ़ा' करते थे — वो खड़े हो कर कहेंगे: **मैंने तुम्हें कभी मजबूर नहीं किया। तुमने चुना।**

और सच ये है, बेटा, कि वो सही हैं। **कोई तुमसे गुनाह नहीं करवा सकता।** वो तजवीज़ कर सकते, मज़ाक़ उड़ा सकते, दबाव डाल सकते, लुभा सकते हैं — मगर जो हाथ अमल करता है वो तुम्हारा है।

और फिर सूरह जन्नत में एक आदमी दिखाती है जो इस दुनिया के एक दोस्त को याद करता है: '**क़ाल क़ाइलुम्-मिन्हुम इन्नी काना ली क़रीन** — उन में से एक कहने वाला कहेगा: बेशक, **मेरा एक साथी** था — **यक़ूलु अ इन्नक ल-मिनल्-मुसद्दिक़ीन** — जो कहता था: क्या तुम वाक़ई उन में से हो जो (ये सब) **सच मानते** हैं? **अ इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व 'इज़ामन अ इन्ना ल-मदीनून** — जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएँगे, क्या हमें वाक़ई बदला दिया जाएगा?'

बेटा, उस पुराने दोस्त का लहजा ग़ौर कीजिए: मोमिन की संजीदगी का मज़ाक़। 'तुम वाक़ई ये मानते हो?'

'**क़ाल हल अन्तुम मुत्तलि'ऊन** — वो कहेगा: क्या तुम **देखना** चाहोगे? **फ़त्तल'अ फ़-रआहु फ़ी सवा-इल्-जहीम** — तो वो झाँकेगा और उसे भड़कती **आग** के **बीच** में देखेगा — **क़ाल तल्लाहि इन किद्त्त ल-तुर्दीन** — वो कहेगा: **अल्लाह की क़सम, तूने मुझे तक़रीबन तबाह कर दिया था!** — **व लौला नि'मतु रब्बी ल-कुन्तु मिनल्-**

मुह्ज़रीन — और अगर मेरे रब का फ़ज़्ल न होता, मैं भी (आग में) हाज़िर किए गए लोगों में से होता।'

बेटा, इसे महसूस कीजिए। 'तूने मुझे तक़रीबन अपने साथ ले लिया था।' वो दोस्त जो उसकी नमाज़ों पर हँसा, जिसने उसे तंग-नज़र कहा, जिसने कहा 'थोड़ा जी लो' — और सिर्फ़ अल्लाह के फ़ज़्ल से उसने पैरवी न की।

बेटा, एक दिन तुम अपनी ज़िंदगी के किसी शख़्स की तरफ़ पलट कर ठीक यही जुमला कहोगे। **यक़ीन कर लो कि ये सही तरफ़ से कहा जाए।**

इब्राहीम: बेटा, मैं ख़्वाब में देखता हूँ

और अब, बेटा, वो हिस्सा जो इस सूरह का दिल है — एक बाप से माँगी गई सब से बड़ी आज़माइश, और एक बेटे का दिया सब से अज़ीम जवाब।

इब्राहीम (अलैहि0), अपनी क़ौम के बुत तोड़ने और आग में डाले जाने के बाद, अपनी सर-ज़मीन छोड़ गए: '**व क़ाल इन्नी ज़ाहिबुन इला रब्बी स-यह्दीन** — और उन्होंने कहा: बेशक, **मैं अपने रब की तरफ़ जा रहा हूँ; वो मुझे हिदायत देगा।**'

बेटा, एक बूढ़ा आदमी जो कुछ जानता है वो सब छोड़ता, बिना नक़्शे के — और मंज़िल के बारे में मुकम्मल यक़ीन।

'**रब्बि हब ली मिनस्-सालिहीन** — मेरे रब, मुझे **नेकों** में से (एक बच्चा) अता कर।' बेटा, दरख़्वास्त ग़ौर कीजिए: अक़्लमंद बच्चा नहीं, ताक़तवर बच्चा नहीं — एक **नेक**।

'**फ़-बश्शर्नाहु बि-ग़ुलामिन हलीम** — तो हमने उसे एक **बुर्दबार** लड़के की ख़ुशख़बरी दी।' बेटा, 'हलीम' — नर्म, सब्र वाला, ग़ुस्से में देरी वाला। और आप अभी देखने वाले हैं कि उस लड़के में कितना हिल्म था।

'**फ़-लम्मा बलग़ा म'अहुस्-स'अ्य** — और जब वो उसके साथ **काम** की उम्र को पहुँचा, उसके साथ साथ मेहनत करने की — **क़ाल या बुनय्य इन्नी अरा फ़िल्-मनामि अन्नी अज़्बहुक फ़न्ज़ुर माज़ा तरा** — उसने कहा: **ऐ मेरे प्यारे बेटे, मैं ख़्वाब**

में देखता हूँ कि मैं तुम्हें ज़िबह कर रहा हूँ — तो देख तेरा क्या ख़याल है।'

बेटा, रुक कर इसका वज़न महसूस कीजिए। इब्राहीम ने इस बच्चे के लिए दहाइयों इंतेज़ार किया। लड़का अभी उस उम्र तक पहुँचा है जहाँ वो अपने बाप के साथ चल और काम कर सकता है — ठीक वो उम्र जब एक बाप अपने बेटे से एक साथी की तरह लुत्फ़ उठाना शुरू करता है। और हुक्म आ जाता है।

और ग़ौर कीजिए वो कैसे बात करता है: '**या बुनय्य**' — **ऐ मेरे छोटे बेटे**, अरबी में सब से मुहब्बत-भरा मुख़ातिब करने का अंदाज़। वो हुक्म नहीं देता; वो बच्चे को धोका नहीं देता। वो उसे सच बताता है और उसकी राय पूछता है।

और बच्चे का जवाब, बेटा — वो जुमला जो ज़मीन के हर बच्चे को सिखाया जाना चाहिए:

'या अबतिफ़्-'अल मा तुअ्मर — ऐ मेरे अब्बा, जो आपको हुक्म दिया गया वो कर दीजिए — सतजिदुनी इन शा-अल्लाहु मिनस्-साबिरीन — आप मुझे, इन शा अल्लाह, सब्र करने वालों में से पाएँगे।'

बेटा, उस जवाब की हर चीज़ देखिए। वो उन्हें 'या अबति' — **मेरे प्यारे अब्बा** — कहता है, उसी नर्मी के साथ जो उसे मिली। वो बहस या मिन्नत नहीं करता। वो सरचश्मा नाम-ज़द करता है: 'जो आपको **हुक्म दिया गया**' — उसने फ़ौरन समझ लिया कि ये उसके बाप का ख़याल न था।

और सब से ख़ूबसूरत: '**इन शा अल्लाह**' — अगर अल्लाह चाहे। बेटा, सब से बड़ी मुमकिन हिम्मत के लम्हे में भी, उसने अपने सब्र का दावा न किया। उसने उसे अल्लाह की मदद की तरफ़ मंसूब किया। **यही ख़ुद-ए'तिमादी और ग़ुरूर का फ़र्क़ है।**

'**फ़-लम्मा अस्लमा व तल्लहू लिल्-जबीन** — और जब **दोनों** ने **सुपुर्दगी** कर दी, और उसने उसे उसकी **पेशानी** के बल **लिटा** दिया...'

बेटा, क़ुरआन वहीं रुक जाता है। ये छुरी, या बाप का चेहरा, या वो लम्हा बयान नहीं करता। ये बस कहता है: दोनों ने सुपुर्दगी कर दी। दो सुपुर्दगियाँ — बाप की और बेटे

की — और इस्तेमाल हुआ लफ़्ज़ '**अस्लमा**' है, उसी अस्ल से जिस से **इस्लाम**।

'**व नादैनाहु अंय्या इब्राहीम** — और हमने उसे पुकारा: **ऐ इब्राहीम! क़द सद्दक़्तर्-रुअ्या** — **तूने ख़्वाब सच्चा कर दिखाया** — **इन्ना कज़ालिक नज्ज़िल्-मुह्सिनीन** — बेशक, हम **नेको-कारों** को यूँ ही बदला देते हैं — **इन्ना हाज़ा ल-हुवल्-बलाउल्-मुबीन** — बेशक, ये एक **खुली आज़माइश** थी।'

बेटा, ग़ौर से ग़ौर कीजिए: 'तूने ख़्वाब **सच्चा** कर दिखाया।' **हुक्म कभी क़त्ल न था — ये तैयारी थी।** अल्लाह सुपुर्दगी चाहते थे, बेटा नहीं। और जिस लम्हे सुपुर्दगी मुकम्मल हुई, आज़माइश ख़त्म हो गई।

'**व फ़दैनाहु बि-ज़िब्हिन 'अज़ीम** — और **हमने उसे एक अज़ीम क़ुरबानी से फ़िद्ये में छुड़ा लिया।**'

बेटा, और यही वजह है कि हर साल, पूरी ज़मीन पर, लाखों मुसलमान ईद-उल-अज़्हा के दिन एक जानवर ज़िबह करते हैं। **हम एक कहानी की याद नहीं मना रहे। हम एक सुपुर्दगी को दोबारा अदा कर रहे हैं।**

'**व तरक्ना 'अलैहि फ़िल्-आख़िरीन** — और हमने उसके लिए बाद की नस्लों में छोड़ा: **सलामुन 'अला इब्राहीम** — **इब्राहीम पर सलाम।**'

बेटा, और यहाँ वो सबक़ है जिसे साथ ले जाना है: **जो कुछ इब्राहीम से छोड़ने को कहा गया, वो उन्हें वापस मिला और ज़्यादा।** उन्होंने अपनी सर-ज़मीन छोड़ी — अल्लाह ने उनकी नस्ल को क़ौमें बना दिया। वो अपना बेटा देने को तैयार थे — और उसी बेटे की नस्ल से आख़िरी रसूल ﷺ आए। वो आग में अपनी जान देने को तैयार थे — और अल्लाह ने आग को ठंडा कर दिया।

बेटा, **अल्लाह के सुपुर्द की गई कोई चीज़ कभी ज़ाया नहीं होती। ये सिर्फ़ बदल दी जाती है।**

यूनुस, और मछली का क़ैद-ख़ाना

फिर सूरह दूसरे अंबिया से गुज़रती है — मूसा और हारून (अलैहि0), इल्यास, लूत

— और यूनुस (अलैहि0) तक पहुँचती है, जिनकी कहानी यहाँ हैरत-अंगेज़ इख़्तिसार से सुनाई गई।

'**व इन्ना यूनुस ल-मिनल्-मुर्सलीन** — और बेशक, यूनुस रसूलों में से था — **इज़ अबक़ा इलल्-फ़ुल्किल्-मश्हून** — जब वो **भरी** हुई **कश्ती** की तरफ़ **भाग** गया।'

बेटा, वो अपनी क़ौम को अल्लाह की इजाज़त आने से पहले झुँझलाहट में छोड़ आए थे। '**फ़-साहम फ़-काना मिनल्-मुद्हज़ीन** — तो उसने **क़ुर'आ** डाला और **हारने** वालों में से हो गया — **फ़ल्तक़महुल्-हूतु व हुव मुलीम** — फिर बड़ी **मछली** ने उसे **निगल** लिया, जब कि वो क़ाबिल-ए-मलामत था।'

और फिर, बेटा, वो आयत आती है जिसने बे-शुमार मोमिनीन को उनके सब से अंधेरे लम्हों में बचाया:

'**फ़-लौला अन्नहू काना मिनल्-मुसब्बिहीन — और अगर वो अल्लाह की तस्बीह करने वालों में से न होता — ल-लबिस फ़ी बत्निही इला यौमि युब्'असून — वो उसके पेट में क़ियामत के दिन तक पड़ा रहता।**'

बेटा, जज़्ब कीजिए ये आयत क्या कह रही है। किस चीज़ ने उसे मछली के पेट से, समंदर की गहराइयों में, मुकम्मल अंधेरे में, बिना किसी मुमकिन इंसानी मदद के, बाहर निकाला? ताक़त नहीं। चालाकी नहीं। कोई बचाओ की पार्टी नहीं।

तस्बीह। उसकी अल्लाह की तस्बीह करने की **आदत** — जिसे उलमा उसकी बोहरान **से पहले** की इबादत के साथ साथ समझाते हैं।

बेटा, ये पूरे क़ुरआन के सब से अमली सबक़ में से एक है। **जो ज़िक्र आप अपने आसान दिनों में करते हैं वो उस दिन के लिए जमा किया जा रहा है जब आपको निकाले जाने की ज़रूरत होगी।** यूनुस एक ऐसी जगह थे जहाँ कोई न पहुँच सकता — और वो अल्फ़ाज़ जो वो सारी ज़िंदगी कहते आए थे वहाँ उन तक पहुँचे।

और उस अंधेरे से उनकी दुआ कहीं और दर्ज है: '**ला इलाह इल्ला अन्त सुब्हानक इन्नी कुन्तु मिनज़्-ज़ालिमीन**' — तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है, बेशक मैं ज़ालिमों में से था। नबी ﷺ ने फ़रमाया कि कोई मुसलमान किसी चीज़ के लिए इस

से दुआ नहीं करता मगर अल्लाह उसे क़ुबूल करते हैं।

बेटा, इसे याद कर लीजिए। और इसकी बनावट ग़ौर कीजिए: **इस में कोई दरख़्वास्त है ही नहीं।** ये तौहीद है, फिर तस्बीह, फिर इक़रार। उन्होंने रिहाई तक नहीं माँगी — और वो रिहा कर दिए गए।

'**फ़-नबज़्नाहु बिल्-'अरा-इ व हुव सक़ीम** — तो हमने उसे खुले साहिल पर **डाल** दिया जब कि वो **बीमार** था — **व अम्बत्ना 'अलैहि शजरतम्-मिंय्यक़्तीन** — और हमने उसपर एक **बेल-दार (कद्दू जैसा) पौधा** उगाया।'

बेटा, उस तफ़्सील की नर्मी देखिए। एक आदमी एक बंजर साहिल पर फेंका गया, उसकी खाल छिल चुकी — और अल्लाह उसपर छाँव के लिए एक चौड़े पत्तों वाला पौधा उगाते हैं। वही क़ुदरत जिसने मछली को हुक्म दिया उसके आराम के लिए एक पत्ता बंदोबस्त करती है। **यही तुम्हारा रब है: वो बड़े और छोटे को उसी एक फ़िक्र से सँभालते हैं।**

'इज़्ज़त के रब की तस्बीह

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, उन झूठों को रद्द कर के जो लोग अल्लाह से जोड़ते थे — ये दावा कि उनकी बेटियाँ थीं, उनके और जिन्न के दरमियान रिश्तेदारी का दावा — और फिर ये इज़्ज़त उन को देती है जो उनकी ख़िदमत करते हैं:

'**व लक़द सबक़त कलिमतुना लि-'इबादिनल्-मुर्सलीन** — और हमारा फ़रमान हमारे बंदों, रसूलों के लिए पहले ही जारी हो चुका — **इन्नहुम ल-हुमुल्-मन्सूरून** — कि **वही ग़ालिब आएँगे** — **व इन्ना जुन्दना ल-हुमुल्-ग़ालिबून** — और कि **हमारे लश्कर ही जीतने वाले हैं।**'

बेटा, ये मक्का में नाज़िल हुआ जब 'हमारे लश्कर' एक मुट्ठी-भर सताए गए लोग थे, उन में से कुछ ग़ुलाम धूप में तशद्दुद किए जा रहे थे। और अल्लाह ने नतीजा पहले से एलान कर दिया, यक़ीन के माज़ी के सीग़े में: **फ़रमान पहले ही जारी हो चुका।**

और आख़िरी तीन आयतें, बेटा — और ये क़ुरआन के सब से ख़ूबसूरत इख़्तिताम में

से हैं:

'सुब्हान रब्बिक रब्बिल्-'इज़्ज़ति 'अम्मा यसिफ़ून — पाक है तुम्हारा रब, 'इज़्ज़त का रब, उन बातों से जो वो बयान करते हैं — व सलामुन 'अलल्-मुर्सलीन — और रसूलों पर सलाम — वल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन — और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए, जहानों का रब।'

बेटा, अली इब्न अबी तालिब (रज़ि0) के बारे में आता है कि उन्होंने कहा: जो चाहता है कि क़ियामत के दिन उसे अज्र का भर-पूर पैमाना दिया जाए, वो हर महफ़िल के आख़िर में कहे: 'सुब्हान रब्बिक रब्बिल्-'इज़्ज़ति 'अम्मा यसिफ़ून, व सलामुन 'अलल्-मुर्सलीन, वल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन।'

बेटा, तीन लाइन: अल्लाह की तस्बीह, उसके रसूलों पर सलाम, और जहानों के रब की तारीफ़। इन्हें कहिए जब आप किसी महफ़िल से उठें, कोई मीटिंग बंद करें, या कोई गुफ़्तगू ख़त्म करें — **एक कामिल इख़्तिताम, ख़ुद क़ुरआन का सिखाया हुआ।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. नमाज़ में अपनी सफ़ें सीधी करो और बंद करो — तुम फ़रिश्तों की तरतीब की नक़्ल कर रहे हो।

2. उस दिन कोई तुम्हारे फ़ैसलों की ज़िम्मेदारी न लेगा: 'हमारा तुमपर कोई ज़ोर न था।'

3. एक दिन तुम किसी की तरफ़ पलट कर कहोगे 'तूने मुझे तक़रीबन तबाह कर दिया था' — यक़ीन कर लो तुम उस जुमले की बची हुई तरफ़ पर हो।

4. अपने बच्चों से वैसे बात करो जैसे इब्राहीम (अलैहि0) ने की — 'या बुनय्य', सच के साथ और उनकी राय की इज़्ज़त के साथ।

5. हुक्म तैयारी थी, क़त्ल नहीं: अल्लाह सुपुर्दगी चाहते हैं। और उनके सुपुर्द की कोई चीज़ कभी ज़ाया नहीं होती — सिर्फ़ बदल दी जाती है।

6. तुम्हारे आसान दिनों का ज़िक्र वो रस्सी है जो तुम तक मछली के पेट में पहुँचती

है।

7. अपनी महफ़िलें वैसे बंद करो जैसे सूरह बंद होती है: 'सुब्हान रब्बिक रब्बिल्-'इज़्ज़ति... वल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-'आलमीन।'

या अल्लाह, हमें इब्राहीम (अलैहि0) की सुपुर्दगी, इस्माईल (अलैहि0) का जवाब, और यूनुस (अलैहि0) की तस्बीह अता कीजिए। आमीन।